कर्म

जन्म से लेकर मृत्यु तक हर दिन मनुष्य अनेक कर्म करते रहता है। जब आप कर्म करते हैं, तो आपको उन कर्मों का फल अवश्य मिलेंगे। अच्छी कार्य को अच्छा फल, बुरा कार्य को बुरा फल मिलेंगे। जब आप कर्म करते हैं, तो उसके फल का अनुभव करना अनिवार्य है। यह है कर्म सिद्धांत।

कर्मों को तीन प्रकारों में विभाजित किया जा सकता हैं। 1. आगामी कर्म 2. संचित कर्म और 3. प्रारब्ध कर्म। इस क्षण से भविष्य में आप जो भी कार्य करते हैं, उन्हें आगामी कर्म के रूप में जाना जाता है। आगामी कर्म करने से, हम पाप और पुण्य कमाते हैं। फिर यह कर्म, संचित कर्मों में जमा होता है। इसकी वजह से हमारा भविष्य बनता है। कर्म करते हुए भी, कर्मफल से बचने का उपाय - बिना अहंकार के, पाप-पुण्य की अपेक्षा किए बिना, और राग-द्वेष के परे जाकर, कर्म करना होगा। यदि इस तरह कर्म करेंगे, तो उसी समय आपको फल मिलेगा। इससे भविष्य नहीं बनता। यह कैसे करना है, यह जानने के लिए, "राग-द्वेश" विषय पढ़ें।

भूतकाल से वर्तमान क्षण तक किए गए कर्मों से अर्जित किए पाप-पुण्य को, संचित कर्म कहा जाता है। प्रारब्ध में हम जो पाप-पुण्य लिख के आए हैं, उसके बिना जो भी शेष कर्मफल हमने अनुभव नहीं किया, वह सब संचित कर्म में आते हैं। आज के लिए, कल भविष्य बन जाता है। लेकिन पर्सो के लिए, कल भूतकाल बन जाता है। तो एक बार जब भविष्य भूतकाल हो जाता है, तो सभी कर्म संचित कर्म बन जाते हैं और उसमें जमा हो जाते हैं। तो संचित कर्मों को साफ करने के लिए, आपको उन्हें ज्ञान की अग्नि में जलाना होगा।

जन्म के समय हमने जो भी भाग्य लिखा है, उसे प्रारब्ध कर्म कहते हैं। आप उन्हें इस जन्म में अनुभव करेंगे। इसलिए समझें कि, इस जन्म में जो कुछ भी हो रहा है, वह पूर्व निर्धारित के अनुसार चल रहा है। इस वजह से, कुछ लोगों को अधिकतम प्रयास के बाद भी फल नहीं मिलते, और कुछ लोगों को आसानी से फल मिलते हैं। क्यों कि फल भाग्य पर आधारित होते हैं, प्रयास के कारण नहीं।

बहुत लोग दान देकर, अच्छे कर्म और सेवा करके, अपनी इच्छाओं को पूरा करने की उम्मीद करते हैं। लेकिन जो उम्मीद किया है, वह नहीं हो रही हैं। क्यों कि, यह जीवन पहले से ही प्रारब्ध द्वारा तय किया जाता है। तो इस समस्या का समाधान, भाग्य को मिटाने की शिक्षा प्राप्त करना।

ऊपर कहा गया ज्ञान के अनुसार, यदि आप भविष्य में फल की अपेक्षा करते हैं, तो जन्म-मृत्यु चक्र हमेशा जारी रहता है। तो इस जन्म को अंतिम जन्म बनाने के लिए क्या करें? पूर्व निर्धारित प्रारब्ध कर्मों को आनंदपूर्वक अनुभव करना। जैसा कि मार्गदर्शक विषय में कहा गया है, अपने जीवन में होने वाले हर सुख-दुख को ईश्वर की प्रसाद मानकर अनुभव करना। उसी तरह भविष्य बनाना बंद करना, यानी आगामी कर्म संचित कर्म में नहीं बदलने के

लिए, आपको राग-द्वेष से परे जाकर कर्म करना होगा। ज्ञानाग्नि में संचित कर्मों को दग्ध करना होगा। इसका मतलब है कि, हमें भूत कर्मों को दग्ध करना है, और भविष्य का निर्माण नहीं करना है, तभी हम वर्तमान क्षण में हमेशा रहने वाला ईश्वर से मिल सकते है।

ऐसा करने के लिए, आपका जीवन लक्ष्य बदलना चाहिए। जो केवल सांसारिक है उसे प्राप्त करने की इच्छा को छोड़ देना चाहिए। अगर आप सांसारिक माया में फंस गए, तो आपकी इच्छाएं कभी पूरी नही होंगे। इस विषय को समझना होगा कि, कुछ इच्छाएं इसलिए पूरी हो रही हैं क्योंकि वे भाग्य में हैं, और जो भाग्य में नहीं हैं, वे कभी पूरी नहीं होंगे।

अगर आपकी इच्छा सांसारिक है, तो वह सफल होने की कोई गारंटी नहीं है। सब कुछ भाग्य पर आधारित होता है। इसलिए केवल सांसारिक जीवन हमेशा दुख ही देता है। लेकिन भले ही आप पापी हों, यदि आपकी इच्छा आध्यात्मिक है, यानी यदि वह भगवान से संबंधित है, निश्चित रूप से सफल होगा। इसीलिए आदमी परमात्मा से, कुछ भी कितना भी मांग सकता है।

परमात्मा ने आत्माओं को जन्म दिया। आत्माओं ने जीवात्माओं को जन्म दिया। तो आप जीवात्मा, जो माया में फंस गया, किसी भी अवस्था में, आपके पिता या दादा के पास जा सकता है। यह आपका जन्मसिद्ध अधिकार है। यह समझें कि, भले ही आपने सबसे बुरे पाप किए हों, लेकिन वे आपके जन्मसिद्ध अधिकार को रोक नहीं सकते। आत्मा-परमात्मा तक पहुँचने के लिए, भाग्य सहित कुछ भी रोक नहीं सकता। तो आत्मज्ञान प्राप्त करने और ईश्वर समीप तक पहुंचने की इच्छा करो।

लेकिन भगवान तक पहुंचने के लिए, आपको उसका ज्ञान होना चाहिए। आपको उसकी गुण के बारे में पता होना चाहिए। वह राग-द्वेष, त्रिगुण और पाप-पुण्य से परे है। वह अंदर-बाहर हर जगह फैल गया। तो आपको राग-द्वेष, त्रिगुण और पाप-पुण्य से परे जाने का प्रयास करना होगा। आपको दैवी गुण को विकसित करना होगा, और उसके बाद ही आपका मिलन उनसे होगा। दिव्य ज्ञान को जानना आपका जन्मसिद्ध अधिकार है, इसलिए आपको इसका इस्तेमाल करना चाहिए। क्योंकि तभी आपकी इच्छाओं सफल होने की संभावना है।

ईश्वर, खुद पर अधिकार मनुष्य को छोड़कर; उसने इस दुनिया क मनुष्य क अधिकार अपने हाथों में ले लिया है। मतलब भगवान को मनुष्य के ऊपर और मनुष्य को भगवान के ऊपर अधिकार है। मनुष्य का इस दुनिया पर अधिकार नहीं है, केवल इस दुनिया पर भगवान का अधिकार है। मनुष्य केवल भगवान तक पहुंचने के लिए, इस दुनिया के हर चीज को उपयोग कर सकता है। इसलिए अपने अधिकार पर ध्यान दें। आप अपने जन्मसिद्ध अधिकार को छोड़कर, जो आपके अधिकार नहीं उसके पीछे भाग रहे हैं।

इसलिए आपकी इच्छा ऐसा होनी चाहिए: आत्म स्थिति तक पहुंचना, आत्म ज्ञान प्राप्त करना, परमात्मा में मिल जाना, और इस ज्ञान को दूसरों तक फैलाना। यह इच्छा आध्यात्मिक है, यह आपका जन्मसिद्ध अधिकार है, और यह भौतिक दुनिया से संबंधित नहीं है। इसलिए यह निश्चित रूप से सफल होगा।

यदि आप इस तरह इच्छा करते हैं और इसके प्रति प्रयास करते हैं, तो आपकी सांसारिक इच्छाएं अपने आप ही सफल होगा। क्योंकि आप भगवान की ओर यात्रा कर रहे हैं, इसलिए भगवान आपकी सांसारिक आवश्यकताओं की जिम्मेदारी लेगा। यदि आप ऐसा करते हैं, तो आप नए जीवन में प्रवेश करेंगे, जो भाग्य के अनुसार नहीं है। उन सभी समस्याओं के समाधान आते हैं, जो अभी तक हल नहीं हुआ।

ज्ञानाग्नि

हमारे पास न केवल कर्तृभाव है, बल्कि भोगभाव भी है। मतलब, हम कर्ता के रूप में कर्म करते हैं, और भोगनेवाला के रूप में, हम कर्मफल को अनुभव करेंगे। हम कर्मफल से बच नहीं सकते, लेकिन हमारे पास दूसरा भाग, कर्तृभाव भी है। तो कर्मफल को अनुभव करने के साथ-साथ, हम नए कर्म भी करते हैं। नए कर्म करने में, हमें पूरी आजादी है। नए कर्म करते समय भाग्य या पिछले ज्ञान, हमें पूरी तरह से प्रभावित नहीं कर सकते। वे कहेंगे कि पुराने तरीकों का इस्तेमाल करना जारी रखिए, वरना खतरा हो सकता है, इस तरह बोल कर आप में डर पैदा कर सकता है। लेकिन पिछले ज्ञान पर काबू पाके, नया प्रयास करने का मौक़ा हमारे पास है।

कंप्यूटर की खोज के बाद हम टाइपराइटर और उससे संबंधित ज्ञान को भूल गए हैं, उसी तरह हमें हर समस्या का नया समाधान खोजना होगा। तब इसका संबंधित पिछले ज्ञान और भूत कर्म ज्ञानाग्नि में दग्ध होजाएगा। मतलब, यह तभी होता है जब हम पिछले ज्ञान का उपयोग करना बंद कर देते हैं।

इसलिए समस्या आने के बाद, तुरंत इसकी जिम्मेदारी लें, दूसरों को दोष देना बंद करें, महसूस करें कि यह आपके भाग्य के कारण हुआ है, उस समस्या का उपयोग करते हुए, आत्म स्थिति तक पहुंच कर, अपनी आत्मा से उस समस्या से संबंधित नया समाधान प्राप्त करें, और इसे आचरण करें, और इसके माध्यम से पहुंचें आनंद स्थिति। उस समस्या के सारे लक्षण दिव्य है, ऐसा भावना आपके अंदर पैदा होने के बाद, ज्ञानाग्नि प्रज्वलित होती है, और उस समस्या से संबंधित सभी कर्म दग्ध हो जाएंगे। उसके बाद ही उसका संबंधित फल मिलेगा। मतलब, भाग्य में और संचित कर्म में, उस समस्या से संबंधित कर्म दग्ध होने के बाद, आपको फल मिलेगा। तो यह समझें कि, जब आप किसी चीज की इच्छा करते हैं, तो यह इच्छा तभी पूरी होती है, जब उस इच्छा से संबंधित बाधाएं दूर हो जाती हैं।

उदाहरण के लिए आपको शरीर में दर्द है। फिर आप दर्द को भगवान तक ले जाने के लिए सूचित करके, इसे आनंदपूर्वक अनुभव करते हुए, भगवान के पास पहुंचकर, आत्मा से यह सवाल पूछिए - “यह दर्द जब मदद करता है? यह दर्द जब परेशान करता है? यह दर्द दिव्य शक्ति कैसे है? इसे दिव्य शक्ति के रूप में देखने के लिए क्या करें? फिर आत्मज्ञान को आचरण करें और अनुभवात्मक रूप से आपको इसे दिव्य शक्ति के रूप में महसूस करना होगा। इसका मतलब है, जैसा कि मार्गदर्शक विषय में कहा गया, आपको दर्द को परमानंद में

परिवर्तन करना चाहिए, जैसा कि साक्षी विषय में कहा गया, दर्द के माध्यम से साक्षी स्थिति उत्पन्न होना चाहिए।

तब आप अपने अनुभव से समझेंगे कि, समस्या दर्द में नहीं, आप में है। पूर्व में आप, दर्द में मदद करने का गुण नहीं देखा, और आपकी नफरत के कारण समस्या जारी है। इस तरह यदि आप जानते हैं तो, पूर्व में आपके द्वारा किए गए दर्द संबंधी कर्म, ज्ञानाग्नि में दग्ध हो जाएंगे। उसके बाद ही आपको दर्द का परिष्कार मिलेगा, अन्यथा परेशानी जारी रहेगी।

सुख के समय में भी इसी तरह कीजिए। क्योंकि आप सुख और सफलता के गुलाम बन गए। और आपको सुख में भगवान को भूलने की आदत है। यह समझें कि " अच्छा में भी मदद करना और चोट पहुँचाना दोनों गुण है"। लोग पुण्य के गुलाम बन गए, क्योंकि वे इस भ्रम में हैं कि, अच्छे कर्म करने से पुण्य प्राप्त हो जाएगा, और उस पुण्य के माध्यम से पाप दग्ध होगा। लेकिन आप कितना पुण्य करे, फिर भी पिछले पापफल निश्चित रूप से आपके पास आता हैं। यदि आप पुण्य करते हैं, तदनुसार पाप करने के स्थिति भी उत्पन्न होती है। इस दुनिया में केवल पुण्य करना असंभव है। यदि संभावना है, तो भी उस पुण्यफल को अनुभव करने के लिए, आपको दूसरा जन्म लेना होगा। क्योंकि यह जीवन पहले से ही भाग्य से तय होता है। तो इसका उपाय, पुण्य और पाप के माध्यम से भगवान तक पहुंच कर, दोनों को दग्ध करना।

इस तरह जब आप तीन गुणों और इसके संबंधित सभी लक्षणों को दिव्य रूप से देखते हैं, जब आप उन्हें भगवान की प्रतिबिंब के रूप में देखते हैं, उनके माध्यम से यदि आप दिव्य अनुभूति प्राप्त करते हैं, जब आप अनुभव के साथ जानते हैं कि भगवान और भगवान की शक्ति हर चीज में छिपी है, तभी आप कर्म सिद्धांत से बाहर आकर मुक्ति प्राप्त करेंगे। अन्यथा आप कर्म चक्र में फंस जाएंगे। इसलिए प्रारब्ध आगामी संचित कर्मों को दूर करने का तरीका जानने के लिए उत्साह दिखाइए। यह कहा जाता है कि, "श्रद्धावान लभते ज्ञानम्"। इसका मतलब है कि, आप कितना श्राद्ध दिखाते हैं, उतना ज्ञान प्राप्त करते हैं। यहां समझे कि, जब आप इस ज्ञान को आचरण करेंगे, तभी आप सफल होंगे, अन्यथा आप पीड़ित बने रहेंगे।

** यह ज्ञान तेलुगु भाषा से अनुवादित है। तेलुगु या अन्य भाषाओं में यह ज्ञान पढ़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें **http://darmam.com/library.html**

दान

न्यूएनर्जी-अद्वैत ज्ञान से प्रेरित कोई व्यक्ति या कोई भी, दान करना चाहता है, तो कृपया निम्नलिखित बैंक खाते में पैसा जमा करें। आपकी मदद हमें इस ज्ञान को बहुत सारे लोगों तक फैलाने के लिए प्रोत्साहित करेगी। Name: P.Sreedhar; SBI Bank A/c No: 30603897922. Branch: Hanamkonda; City: Hanamkonda, Warangal District, India. IFSC Code: SBIN0003422 Mobile No: 9390151912. आपकी उदारता और समर्थन की सराहना की जाती है! This mobile No. also has GooglePay and PhonePe.